44 P
295
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 295

बन्दे मातरम्

भारतमाता की पुकार

अर्थात्

गान्धी विजय

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
30 MAR 1931
DEPARTMENT

चौथी बार १०००

मूल्य -)॥

प्रकाशक

मन्नीलाल शर्मा किताबवाला मु० बिजनौर॥

891.431 B 469 2B

गांधी की विजय

टे० अवतार महात्मा गांधी है भारत का भार उतारन को
राम के संग में थे लक्ष्मन, कृष्णा के संग में बलदाऊ
गांधी के संग में है जवाहर, दुष्टों के संग हारन को
राम के संग में थे बानर, और कृष्णा के संग में ग्वाला
अब गांधी के संग में पबलिक है, इन को समझाने को
कृष्णा रूप से कंश पछाड़ा, राम रूप से रावण मारा
गांधी ने झंडा उठाया है, भारत का भार उतारन को

पेशावर के शहीदों का संदेश

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY GOVT OF INDIA No. 295 Date 6.12.51

ज़ालिम हमारे ऊपर गोली चला रहे हैं।
हम तो शहीद होकर जन्नत को जा रहे हैं॥
पर याद रखना तुम भी ज़ालिम यह रह न जायें।
कुछ दिन में वापिस हम भी एक फेर आ रहे हैं॥
देखो हमारा हक़ है हम हिन्द के हैं मालिक।
इस हिन्द के लिये हम ये सर चढ़ा रहे हैं॥

लानत है यार उनको जो हैं गुलाम इनके।
कहने से दुश्मनों के छुरियां चला रहे हैं॥
ऐ भाइयो पुलिस के ऐ भाई फ़ौज वालो।
हम तो तुम्हारे हक़ में इन्साफ़ चाह रहे हैं॥
यह धर्म है तुम्हारा तुम छोड़ दो गुलामी।
हम आपकी वजह से ये खूं में न्हा रहे हैं॥
यह आरज़ू हमारी तुम मर मिटो इसी पर।
आज़ाद होके रहना ले हम तो आ रहे हैं॥

ग़ज़ल

नहीं रखनी सरकार ज़ालिम नहीं रखनी
आई थी व्योपार करन को, जहांगीर की शरण रहन को,
बनी गले का हार॥ ज़ालिम नहीं रखनी॥
जलियांवाले बाग़ के अन्दर, निरदोशों पर गोली चला कर
मारे कई हज़ार॥ ज़ालिम नहीं रखनी॥
ग़रीब किसान लगान लगाकर, भूखे दिये हैं मार॥ ज़ालिम०
लूटे से इनकी बचा न कोई, बढ़ई चमार लुहार॥ ज़ालिम०
क़ानूनों का जाल बिछाया, ऐसी है बदकार॥ ज़ा०
हिन्दू मुस्लिम, जाट, बनिये, लड़ाये बीच दरबार॥ ज़ा०

खेती से करे पूरी उखाई, धमकी की भरमार ॥ज़ा०
पेशावर में गोली चलाकर, मारे कई हज़ार ॥ज़ा०
झंडा आज़ादी का लेकर, घर घर करा प्रचार ॥ज़ा०
गांधी के अब बनो सिपाही, करो देश उद्धार ॥ज़ा०
मिले स्वराज्य तो निकले कांटा, होजाये बेड़ा पार ॥ज़ा०

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग, जंग में पकड़ूंगी तलवार।
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ,
और मैं करूं सूत तैयार ॥ जंग में ॥
ऊंच नीच सब को बतलाओ, गांधी का पैग़ाम सुनाओ
मैं भी करूं नमक तैयार ॥ जंग में ॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी, बिना काल के नहीं मरूंगी,
गोली खाने को तैयार ॥ जंग में ॥
भारत को आज़ाद करूंगी, दुश्मन को बरबाद करूंगी
कुछ मत सोच करो भरतार ॥ जंग में ॥
असहयोग की फ़ौज सजाओ, कांग्रेस की तोप लगाओ,
दुश्मन भगे समन्द्र पार ॥ जंग में ॥
गांधी जी बन रहे क़लन्दर, शशो पन्ज में पड़ गये बानर

देखो कहा करे करतार ॥ जंग में ॥
अब गांधी ने क़दम बढ़ाया, सब का दिल दहलाया,
देवी होरही है तैयार ॥ जंग में ॥
आज़ादी की छिड़ी जंग अब, बनो सरोजनी सत्य-
वती सब, बहिनो होजाओ हुशयार ॥ जंग में ॥
यह रसिया गा गा के सुनावे, जोश जवानों को भी आवे ॥
वर्मा जी तैयार ॥ जंग में ॥

ग़ज़ल

बनाओ ज़रदार तुम वतन को घरों में चरखा चला २ कर ।
करो न मुफ़लिस उसे ख़ुदारा विदेशी कपड़े मंगा २ कर ॥
सुई भी घर के लिये मंगाओ न अब विलायत से तुम कभी भी
जो रोज़मर्रा की सारी चीज़ें घरों से अपने बना बना कर ॥
बनस्पति घी कभी न खाओ न इसमें खाना कोई पकाओ
बनाओ बच्चों को तुम तवाना वतन का घी ही खिला २ कर
लड़ो न ओ हिन्दू ओ मुसलमां हो अब शीरो शकर सरासर ।
अदालतों को भी बन्द कर दो मुक़द्दमों को उठा २ कर
छिड़ी है आज़ादी की लड़ाई कमर उठ नौजवान कस के ।
बना दो अर्जुन से वीर उनको वतन की गीता सुना २ कर

जो स्वर्ग में हैं हमारे लीडर करेंगे वह उनका खूब वेल्कम
जो इस लड़ाई में होंगे कुर्बां कदम को आगे बढ़ा बढ़ा कर
अब उठो भारत के नौजवानों कि रात गुज़री हुआ सवेरा।
यह शंख तुमको जगा रहा है तुम्हारे शाने हिला २ कर॥

राष्ट्रीय झंडा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥

सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम सुधा बरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण २ में
कांपे शत्रु देख कर रन में, मिट जाये भय संकट सारा॥ झं०
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय, स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥ झं०
आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि २ जाओ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥
झंडा ऊंचा रहे हमारा॥
इस की शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूरा हमारा

ग़ज़ल आज़ादी का पैग़ाम

आबरू पर मुल्क की हम सब फ़िदा हो जायेंगे
कांग्रेस पर हर तरह से हम फ़िदा हो जायेंगे ॥
हासिल आज़ादी करेंगे जिस तरह भी हो सके।
देख लेना दास के नक़्शे क़दम हो जायेंगे ॥
क्यों हमें कमज़ोर समझे हो निहत्था जान के।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला हो जायेंगे ॥
आस से मत खेलना हम हैं वो गोले आग के ।
गर भड़क उठे तो पैग़ामे क़ज़ा हो जायेंगे ॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है
आगया है वक़्त अब नाले रसा हो जायेंगे ॥
माल की होगी ज़रूरत तो लुटा देंगे गौहर।
मुल्क मिल्लत के लिये हम सब गदा हो जायेंगे ॥
इक नये अन्दाज़ से किश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहरलाल नेहरू नाख़ुदा हो जायेंगे ॥
आने वाला वक़्त है तो देख लेना दोस्तो ।
आज जो आजिज़ हैं कल वह क्या से क्या हो जायेंगे ॥

बेरोज़गारों को सलाह

रुप्या कमाने का उपाय

यह ट्रेक्ट जिसका नमूना आपके हाथ में है - इसी नमूने के हमारे यहां से राष्ट्रीय ट्रेक्ट १६ प्रष्ठ और ८ प्रष्ठ के निकलते रहते हैं। व्योपारियों को ८ सुफ़े के ट्रेक्ट १०) और १६ सुफ़े के २०) रुप्ये हज़ार भेजे जाते हैं। और उनकी हानि व लाभ का ख़्याल रक्खा जाता है॥

राष्ट्रीय झंडा	)	नमक का इतिहास	)
आज़ादी का बिगुल	)	इनक़िलाब की लहर	)
झांसी की लड़ाई	)	क्रान्ती की लहर	)
मादरबा की शादी	)॥	सत्याग्रही तलवार	)
कलक्टर की घबराहट	)	महात्माजी की लड़ाई	)
स्वदेशी कफ़न	)	सरोजनी सन्देश	)
भारत माता के ज़ख़्मी लाल	)	देश का राग	)
अंग्रेज़ी अक़ल गुम	)	शहीदों की याद	)

हर क़िस्म की किताबें मिलने का पता

अग्रवाल बुकडिपो
खारी बावली देहली